बचपन
अनिता चंद्राकर
आलोक प्रकाशन

बचपन

बाल कविताओं का संग्रह

अनिता चन्द्राकर

C - अनिता चन्द्राकर - 2022

आलोक प्रकाशन

प्यारे बच्चों,

जीवन का सबसे खूबसूरत और प्यारा समय बचपन ही होता है।संगी साथियों के साथ खेलकूद, पेड़ों पर चढ़ना, झूले झूलना, पतंग उड़ाना, तितलियों के पीछे भागना, बारिश में भीगना और कागज की नाव चलाना, दादा दादी से कहानियाँ सुनना, गाने गाना, नाचना कूदना, बचपन की यही यादें हमें जीवन भर याद रहती हैं, जिसे सोचकर होंठों पर हँसी आ जाती है. पता ही नहीं चलता कि, बचपन को हँसते खेलते जीते हुए जाने कब हम बड़े हो जाते हैं.

अनेक सुंदर भावों और इंद्रधनुषी रंगों के साथ आप सभी के लिए मैं ये कविताएँ लिखी हूँ. अपार स्नेह के साथ यह कविताओं का यह गुलदस्ता आप सभी को देते हुए मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है.....

आशा करती हूँ कि आप पूरे मन से इस किताब को पढ़ेंगे और आपको सभी कविताएँ पसंद आएगी.

अनिता चन्द्राकर

अनुक्रमणिका

1.स्कूल चली मैं 6

2.गुब्बारा 7

3.नानी 8

4. गुड्डे गुड़िया की शादी 9

5. पतंग 10

6.आम 11

7.बंदर मामा 12

8. बरसात 13

9.किताबें 14

10.गाँव की ओर 15

11.नमन हमारा है 16

12. भाईचारा 17

13. मेरा भारत 18

14.नया भारत बनाना है 19

15.मेला 20

16.शरारतें बचपन की 21

17. सीख 22

18. उम्मीद की किरण 23

19. पेड़ 24

20. चंदा तारे 25

21. मेरी कलम 26

22.आओ जाने हम स्वर 27

23. खुशियों के मोती 28

24.पढ़ना लिखना सीखो 29

25.धरोहर 30

26.यातायात के साधन 31

27.फूल 32

28.भोला बचपन 33

29.गौरैया 34

30.प्रकृति.....35

31.माथे का चंदन.....36

32. गुरु की महिमा.....37

33. होली.....38

34. माँ.....39

35. बिटिया.....40

36. पिता.....41

37.किसान.....42

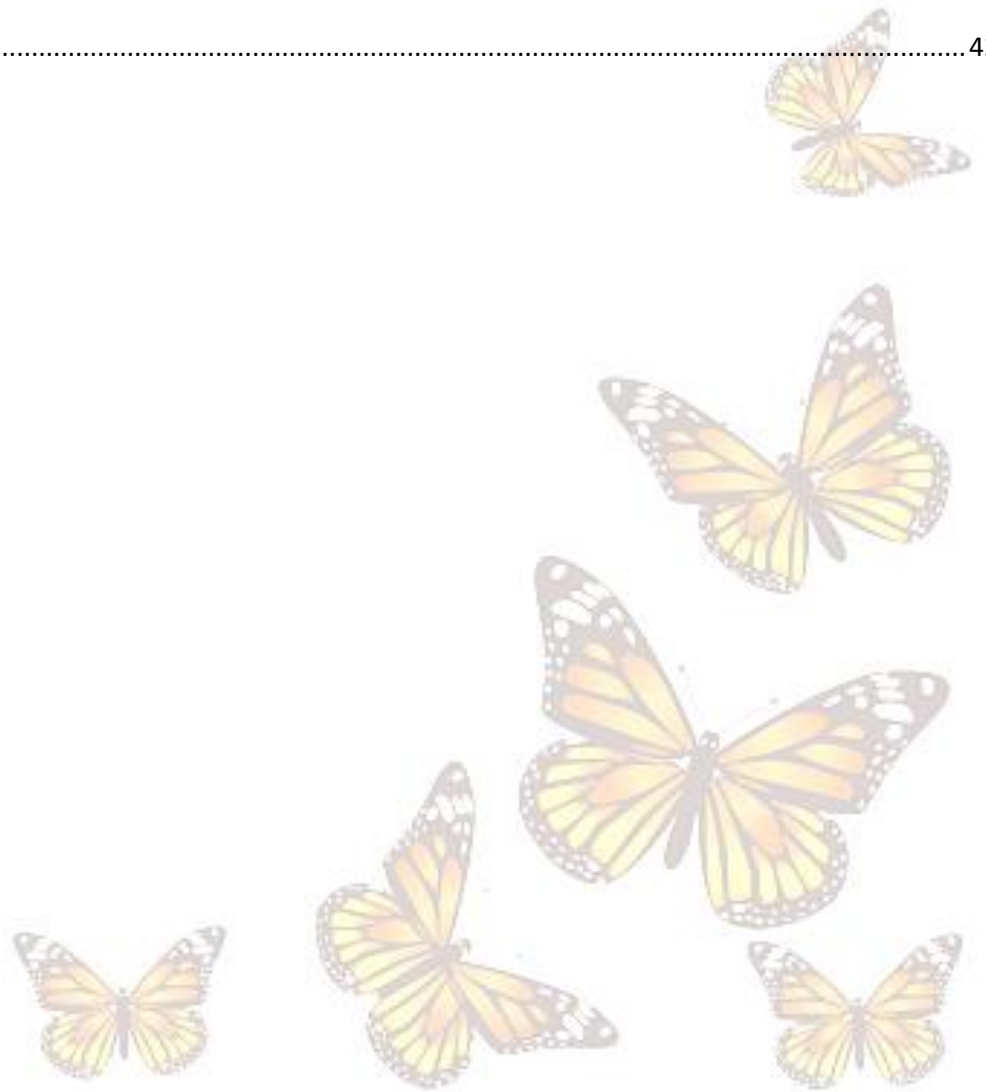

1.स्कूल चली मैं

****

स्कूल चली मैं स्कूल चली।
बस्ता लेकर स्कूल चली।
गुड्डे गुड़िया खेल खिलौने,
मुझको ये सब भाते।
पर इससे भी प्यारी लगती,
टीचर जी की बातें।
खेल खेल में गणित सिखाती,
भाषा का पाठ पढ़ाती है।
लगता विज्ञान मजेदार,
पर्यावरण से मिलवाती है।
रोज सुनाकर नई कहानी,
जीवन का पाठ पढ़ाती है।
गलती जब हो जाती हमसे,
बड़े प्यार से समझाती है।
नहीं घूमना अब गली गली,
स्कूल चली मैं स्कूल चली।

2.गुब्बारा

****

उड़ते नभ में बिन पँखों के,
रंग बिरंगे ये सुंदर गुब्बारे।
लाल, गुलाबी, नीले, पीले,
रंग है इनके कितने सारे।
दिन भर खेलूँ गुब्बारे संग,
लगते हैं ये मुझको प्यारे।
डरता रहता है मन सदा,
कहीं फूट न जाये ये गुब्बारे।
चुन्नू मुन्नू जल्दी आओ,
गुब्बारे वाला आया है।
तरह तरह के रंग बिरंगे,
देखो सुंदर गुब्बारे लाया है।
मुझे चाहिए लाल रंग का,
बाकी कोई भी तुम ले लो।
उड़ न जाये ये दूर गगन में,
जल्दी जल्दी भीतर चलो।

3.**नानी**

****

नानी मेरी प्यारी नानी,
हमें सुना दो एक कहानी।
हो परियों की सुंदर दुनिया,
या जिसमें हो राजा रानी।
नानी बोली आओ बच्चों,
तुम्हें सुनाऊँ एक कहानी।
भीषण गर्मी पड़ी गाँव में,
नहीं बचा तालाब में पानी।
हाहाकार मच गया गाँव में,
संकट में पड़ गई जिंदगानी।
सबको बात समझ में आई,
पेड़ लगाने की सबने ठानी।
नहीं काटेंगे अब एक पेड़ भी,
बचायेंगे एक एक बूंद पानी।

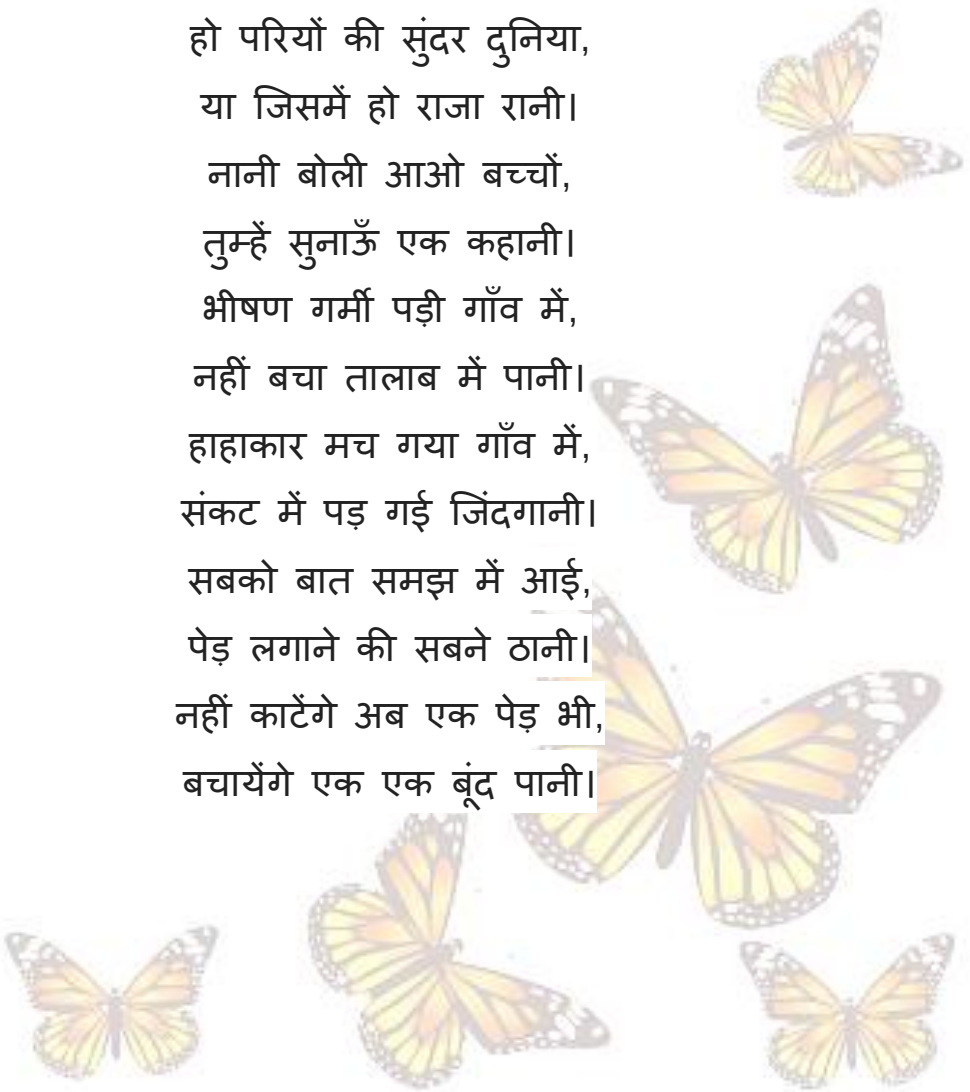

4. गुड्डे गुड़िया की शादी

****

मेरी गुड़िया की शादी है आज, चलो मंडप सजायेंगे।
मुनिया बना रही रंगोली, हम फूलों की लड़ियाँ बनायेंगे।
आओ प्यारी सखियाँ आओ, गुड़िया को हल्दी लगायेंगे।
गुड्डा आएगा जब लेकर बारात, हम गीत खुशी के गायेंगे।
बाजा बजायेंगे राजू भैया, मस्त मगन हो सब नाचेंगे।
दादा दादी और मम्मी पापा, गुड्डे को तिलक लगायेंगे।
सबसे सुंदर है गुड़िया मेरी, उसको खूब सजायेंगे।
नए नए कपड़े पहनकर, हम बच्चे त्यौहार मनायेंगे।
माँ जल्दी से पकवान बना दो, मिलकर बच्चे खायेंगे।
गुड्डे गुड़िया की शादी में, ख़ूब धमाल मचाएंगे।

5. **पतंग**

******

भैया मेरे एक पतंग बना दो,
मैं भी उसे उड़ाऊँगी।
उड़ता देख उस पतंग को,
मैं भी खुश हो जाऊँगी।
बाँध दो उसमें पक्का धागा,
तेज हवा में जो टूटे ना।
उड़ता जाए वो दूर गगन में,
ऊँचे पेड़ों में उलझे ना।
दिखने में जो सबसे सुंदर हो,
भैया ऐसा पतंग बनाना।
मान लो अपनी बहना का कहना,
अब न करो बहाना।
सर्र-सर्र सर्र-सर्र पतंग उड़ेगी,
आसमान सज जाएँगे।
सूरज देखता रह जायेगा,
सब बच्चे ताली बजाएँगे।

6.आम

****

गर्मी आई गर्मी आई।
पकने लगे अब आम।
हवा चली भई हवा चली।
गिरने लगे सब आम।
मुनिया का जी ललचाया।
देख पीले पीले आम।
एक बड़ी सी टोकरी में
मुनिया भरकर लाई आम।
खाई और खिलाई सबको
खट्टे मीठे रसीले आम।
आम फलों का राजा है।
सबके मन को भाये आम।
चेहरा सबका ख़िल गया।
खाकर मीठे ताजे आम।
मुनिया रानी बड़ी सयानी।
नहीं तोड़ती कच्चे आम।
करती थी दिन भर रखवाली।
मिला तभी तो पके आम।

7.बंदर मामा

****

इस डाली से उस डाली पर।
कूद रहे हैं बंदर मामा।
नीचे खेल रहे हैं बच्चे
राजू गोलू रानी श्यामा।
दो केले रख आई गुड़िया,
शायद बंदर को भूख लगी हो।
नीचे आकर केला खाकर,
अपनी भूख मिटा ले वो।
नीचे आया बंदर मामा,
छुप गए बच्चे घर के अंदर।
झूम उठा वो केले पाकर,
चढ़ा पेड़ पर फिर केले लेकर।
अपने साथी को दे केला एक,
खुद भी खाया केला एक।
बच्चे निकले घर के बाहर,
बनना है अब उनको भी नेक।

8. बरसात

****

रंग लुटाती, मस्ती छलकाती, आई है बरसात।
काले बादल लेकरआया, ख़ुशियों की बारात।
सौंधी महक मिट्टी की, मिल गई हवा के संग।
झूम रही है डाली डाली, जीवन में आई उमंग।
कोयल गाती गीत मनोहर, लगा थिरकने मोर।
चहक उठे विहग दल, पवनों ने मचाया शोर।
महका उपवन फूलों से, भीगा हर एक कोना।
हरी भरी हो गई धरती, बारिश का रूप सलोना।
कलकल गाती नदियाँ, झर झर झरते हैं झरने।
बच्चों की टोली निकली, लगी नाव अब चलने।
मेघ देते हैं जीवन हमको, प्रकृति की ये सौगात।
रंग लुटाती मस्ती छलकाती, आई है बरसात।

9.**किताबें**

****

किताबें सिखाती है जीने का ढंग।
ज़िंदगी में भर देती है विविध रंग।
हताश मन में जगाती नव आस।
किताबें होती है अंधेरे में उजास।
थाम लेती है हाथ बनकर मित्र।
अनुभव देकर सँवारती चरित्र।
निराश मन में भरती है उमंग।
रहकर देखो किताबों के संग।

10.गाँव की भोर

****

मुर्गा करता कुकड़ूँ कूँ, है उनका काम उठाना।
जगनू ग्वाले को देखकर , बछड़े का काम रंभाना।
बछड़े की आवाज सुनकर, गैया करती राग शुरू।
इधर बकरियों की में-में, उधर शेरू का भोंकना।
बाबा के चाय की ख़ुशबू, मुहल्ले भर को देती आमंत्रण।
अपनेपन की मिठास से बढ़कर, नहीं कोई और निमंत्रण।
अब आती काम की बारी, सब मिलजुल कर निपटाते।
चिड़ियाँ फुदकती आँगन में, कृषक हल ले खेतों को जाते।
माँ बनाती है चावल की रोटी, पौ फटने से पहले ही।
दादी के सिलपट्टे की चटनी, मिल बाँट कर सब खाते।
खुशियों से होती भोर शुरू, बच्चे भी जल्दी उठ जाते।
माँ की आँचल में छिपकर वे, अपनी ठंड भगाते।
शीतल मंद बयार आती , लेकर फूलों की ख़ुशबू।
भौंरें तितली संगी साथी, कभी कबूतर की गूँटर गूँ।
पनघट की शोभा न्यारी, होती गाँव की सुनहरी भोर।
सिंदूरी रंग से सजा आसमाँ ,ख़ुशहाली फैले चहुँ ओर।

11.नमन हमारा है

****

सीमा पर खड़े पहरेदारों को
भारत देश के रखवालों को
सीने पर गोली खाने वालों को
नमन हमारा है।
जिनके रक्त से धरा हो जाती पावन
गर्वित हो जाता देश का कण कण
जिनके शौर्य से गुंजित होता गगन
उनको नमन हमारा है।
तिरंगा नभ में लहराने वालों को
दूध की लाज बचाने वालों को
राखी की शान बढ़ाने वालों को
नमन हमारा है।
पिता की आँखों का तारा
नन्हे नन्हे बच्चों का सहारा
अपनी माँ का बेटा दुलारा
तुमको नमन हमारा है।

12. **भाईचारा**

****

द्वेष, दंभ सब छोड़कर, हम अपनाएँ भाईचारा।
तभी खुशहाल होगा, घर समाज और देश हमारा।
विश्वास की नींव हो गहरी, कटुता को मन से काटें।
बढ़े हाथ सदा मदद को, फूल खुशियों के बाँटें।
हमारी संस्कृति यही सिखाती, विश्व है एक परिवार।
मन में मत पालो भेदभाव , प्रेम ही जग का आधार।
महकेगी ये धरा तभी, जब आपस में होगा भाईचारा।
शत्रुता केवल रक्त बहाती, जग में फैलाता अंधियारा।

13. **मेरा भारत**

****

अनेकता में एकता की मिसाल,
है विश्वगुरु मेरा भारत महान।
संस्कृति सभ्यता बड़ी निराली,
किन शब्दों में मैं करूँ बखान।
विविध धर्म के लोग यहाँ पर,
है अगणित बोली और भाषा।
इसी भूमि में जन्म लूँ हर बार
है यही मेरे मन की अभिलाषा।
खड़ा हिमालय रक्षक बनकर,
हिंद महासागर चरणों को धोता।
कहीं नदियाँ, कहीं मरुस्थल,
वन उपवन मंगलगान गाता।
चमकता रहे सूर्य सा नभ में,
लहराये जग में अपना तिरंगा।
निश्छल निःस्वार्थ कर्म करे हम,
ज्यों बहती जाती पावन गंगा।
नैतिकता सदाचार को अपनाये।
रिश्तों का रखे हम मान।
साधु संतों की पुण्य भूमि यह,
है विश्वगुरु मेरा भारत महान।

14.**नया भारत बनाना है**

****

जाति धर्म की बातें भूलकर, राष्ट्र धर्म अपनाना है
अपनी मेहनत और लगन से,नया भारत बनाना है।
रख विचारों में शुद्धता, नेकी की राह पर चलना है।
सत्य की राह पर चलकर, मंजिल तक पहुँचना है।
समान रहे जहाँ नर और नारी, ऐसा देश बनाना है।
सुशिक्षित हो जन जन, शिक्षा को हथियार बनाना है।
भूखा न हो कोई यहाँ, हर हाथ को काम दिलाना है।
बेटियाँ भी भर सके उड़ान, ऐसा आसमान बनाना है।

15.**मेला**

****

नदी किनारे लगता मेला।
सबके मन को भाता मेला।
कहीं खिलौने कहीं मिठाई,
ढेरों खुशियाँ देता है मेला।
झूलों पर बच्चे झूलते जाते।
हँसते गाते और धूम मचाते।
दिन भर मेला में घूमते रहते।
चारों तरफ वे नजर घुमाते।
बजती बाँसुरी की धुन कहीं।
डम डम बजते डमरू कहीं।
तरह तरह के जहाँ खिलौने,
लगता बच्चों का मन वहीं।

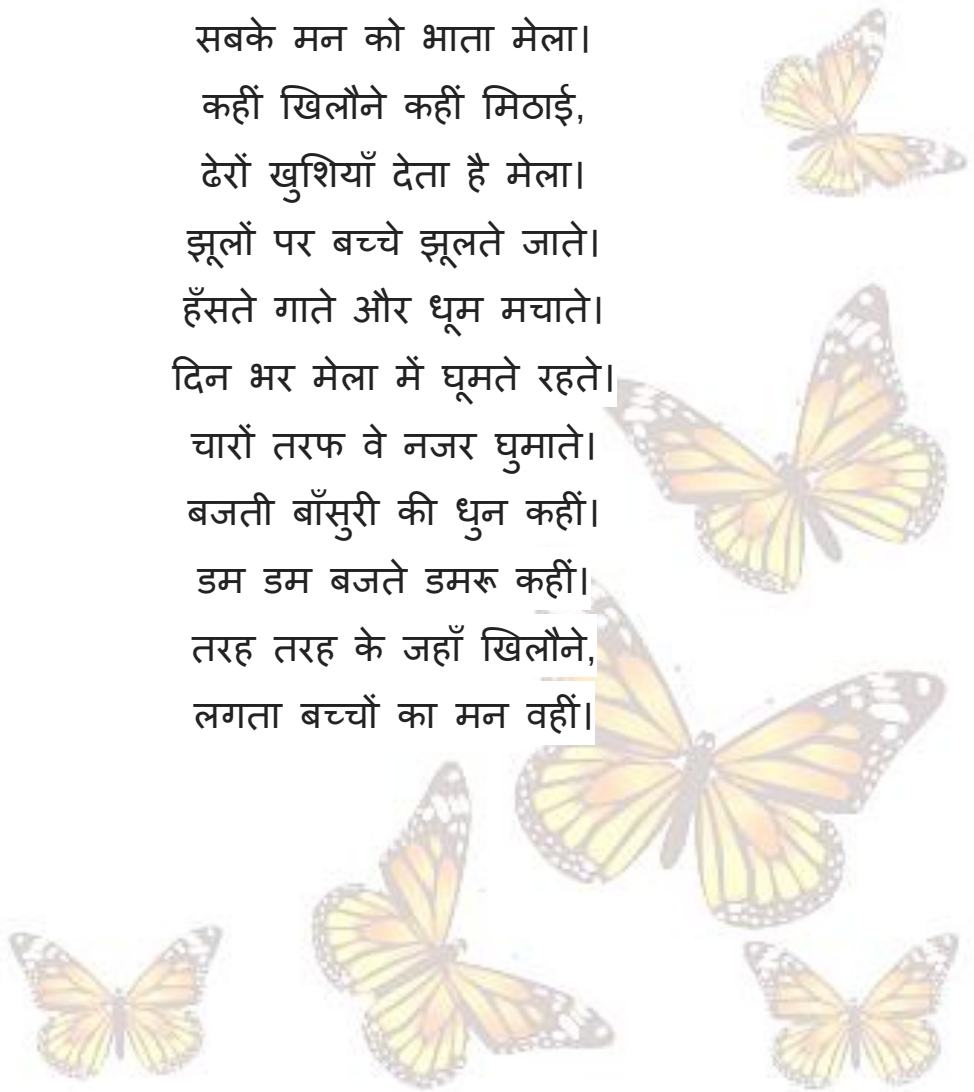

16.शरारतें बचपन की

****

दुनिया भर की दौड़ लगाते, बन जाते वे छुकछुक रेल।
धूल मिट्टी गलियाँ आँगन में, तरह तरह के खेले खेल।
दुनियादारी से क्या लेना, पल में झगड़ा पल में मेल।
निष्कपट निश्छल बचपन, रखते न मन में कोई मैल।
धूप हो या हो बारिश, वो तो है अपने मन का राजा।
कभी चलाते कागज की कश्ती, कभी बजाते बाजा।
पेड़ों पर चढ़ते, झूला झूलते, तोड़े फल मीठा ताजा।
उनकी टोली धूम मचाती, खोले ख़ुशियों का दरवाजा।
तारों में ढूँढे चोर सिपाही, चाँद में पा लेते वे बुढ़िया।
तितली के पीछे भागते, कभी चढ़ते छत की सीढ़ियाँ।
दादा दादी से सुने कहानी, माँ से सुने मधुर लोरियाँ।
पल भर में आती मीठी नींद, सपनों से भरी अँखियाँ।

17. **सीख**

****

सूरज उगता पूरब से, पश्चिम में डूब जाता।
अंधकार को चीरकर, रोज सुबह फिर आता।
सूरज के आने से पहले, बच्चों तुम भी उठ जाना।
देख पाओगे सुंदर प्रकृति, सुनना चिड़ियों का गाना।
खड़ा हिमालय उत्तर में, दक्षिण में सागर गहरा।
देश की रक्षा करता पर्वत, दिन रात देता है पहरा।
कड़ी परिश्रम करके बच्चों, जीवन में आगे बढ़ना।
मत घबराना बाधा देख, खुद पर भरोसा रखना।

18. **उम्मीद की किरण**

****

उड़ चले हम नील गगन में, हौसलों के पंख लगाकर ।
पूरे कर ले सपनों को , एक नई उम्मीद जगाकर ।
संकल्प अगर मजबूत है , तो सारा संसार हमारा है।
मेहनत और लगन हो साथ, तो ये आकाश हमारा है।
उम्मीद की एक किरण, बुझे मन में विश्वास जगाती ।
सूरज आता जब रोज सबेरे, रात अंधेरी ठहर न पाती।

19. **पेड़**

****

दिन रात गरल पीकर, ये देती शुद्ध हवाएँ।
इनकी शीतल छाया, तपते मन को भाये।
जड़ी बूटी की खान पौधे, प्रकृति का वरदान।
पंछियों का बसेरा यहीं, पेड़ होते हैं महान।
प्रदूषण से हमें बचाते , करते ताप नियंत्रण।
महकाते घर आँगन को, मेघों को देते आमंत्रण।
वृक्षों की न करो कटाई, है जीवन के आधार।
फूल फलों से लदकर, करते धरती का श्रृंगार।
ना भूले वृक्षों का उपकार ,आओ करे वृक्षारोपण।
बाढ़-सूखे से हमें बचाकर, देते हैं नवजीवन।

20. चंदा तारे

****

नील गगन में चंदा तारें, बच्चों को वे लगते हैं प्यारे।
चाँद में ढूँढते दादी अम्मा, बच्चों के हैं वे प्यारे मामा।
तारों में ढूँढते चोर सिपाही, उनके पीछे चलते हैं राही।
चाँद अकेले ही घूमते रहता, कभी न रुकता कभी न थकता।
चारों तरफ है अनगिन तारें, बच्चों को वे लगते हैं प्यारे।
उनको गिनने की शर्त लगाते, पर कोई उनको गिन न पाते।
गिनते गिनते वे थक जाते, फिर मीठे सपनों में खो जाते।
नहीं रहते साथ हमारे, छुप जाते हैं सारे तारें।
नील गगन में चंदा तारें, बच्चों को लगते हैं प्यारे।

21. **मेरी कलम**

****

सुंदर अक्षर लिखती हैं, बिना थके वो चलती है।
नीली काली स्याही वाली, भीनी भीनी ख़ुशबू वाली।
साथ निभाती है वो मन से, हम भी रखते बड़े जतन से।
कापी में सुंदर चित्र बनाते, शाबासी हम शिक्षक से पाते।
मोती जैसे अक्षर देखकर, ताली बजाते गदगद होकर।
कलम है हथियार हमारा, इससे तो तलवार भी हारा।
लिखे कलम से अच्छी बात, कर ले खुद से मुलाकात।
चलो कलम को मित्र बनायें, भटके हुए को जो राह दिखाएँ।

22.आओ जाने हम स्वर

****

अ - अकड़ छोड़ हम मिलनसार बनें।
आ - आशाओं के नव दीप जलाएँ।
इ - इच्छाशक्ति को मजबूत बनाएँ।
ई - ईमानदारी से हर काम करें।
उ - उपकार करके पुण्य कमाएँ।
ऊ - ऊर्जावान और कर्मठ बनें।
ऋ - ऋषियों की यह पावन धरा।
ए - एक रहे सदा ये भारत मेरा।
ऐ - ऐब किसी का नहीं तलाशो।
ओ- ओछापन का त्याग करो।
औ - औरतों को सदा सम्मान दें।
अं - अंधकार को चलो दूर भगाएँ।
अः - अः से आओ हम शब्द ढूँढें।

23. **खुशियों के मोती**

****

चुन लो बच्चों खुशियों के मोती, अपने छोटे से संसार में।
बिखरी हैं आसपास ही, गली गली और घर द्वार में।
खिलखिलाकर हँसना सीखो, छोटी छोटी बात में।
दीपक सा तुम जलना सीखो, काली अंधेरी रात में।
नहीं मिलती खुशियाँ पैसे से, न हाट में न बाजार में।
सँवरती है ये अनमोल ज़िंदगी, अपनों के ही प्यार में।
मत भरो तिजोरी दौलत की, कुछ नहीं इस व्यापार में।
जाना है खाली हाथ सभी को, झूमों महकती बयार में।

24.पढ़ना लिखना सीखो

****

मन लगाकर पढ़ना बच्चों।
जीवन में आगे बढ़ना बच्चों।
सही राह पर चलना सदा तुम।
बुरी संगत में मत पड़ना तुम।
सच का साथ कभी न छोड़ो।
खुशियों से तुम नाता जोड़ो।
हँसना और हँसाना बच्चों।
जीवन में आगे बढ़ना बच्चों।
करना मदद सच्चे मन से।
तब पाओगे आशीष उनसे।
पढ़ लिख कर तुम बनो महान।
जग में बनाओ अपनी पहचान।
आपस में नहीं लड़ना बच्चों
जीवन में आगे बढ़ना बच्चों।
तरह तरह के खेलो खेल।
रखो जीवन में सबसे मेल।
बोलो सबसे मीठी वाणी।
मत पहुँचाओ किसी को हानि।
तन मन स्वस्थ बनाना बच्चों।
जीवन में आगे बढ़ना बच्चों।

25.धरोहर

****

देश की प्राचीन मूर्तियाँ हैं खास।
बयां करती गौरवशाली इतिहास।
कला और संस्कृति की पहचान।
भारत भूमि की है अनुपम शान।
दिन रात अथक परिश्रम से,
होता है ऐसा भव्य निर्माण।
अपनी संस्कृति कला परंपरा को,
संवारेंगे हम भारत की संतान।
परिचित कराती हमें अतीत से,
कलाकृतियाँ हैं अमूल्य धरोहर।
विलुप्त होने से पहले जागे हम,
निभाएँ फर्ज इसका संरक्षण कर।

26.**यातायात के साधन**

****

यातायात साधनों के विस्तार से, दूरियाँ हो गई है अब कम।
तय करना हो जब लंबी दूरी, पहुँचना हो जाता है सुगम।
वायुयान हमारा समय बचाता, तकनीकी का हुआ विकास।
कर लो सारी दुनिया की सैर, घूमो धरती पर या देखो आकाश।
जाओ बस में बैठकर या, करो रेलगाड़ी की सवारी।
नियमों का पालन करना बच्चों, फैली है कोरोना महामारी।

27.फूल

****

डाली पर मुस्काते सुंदर फूल, सबको खुशियाँ देते फूल।
अपनी सुंदरता और महक से, सबके मन को भाते फूल।
जाने कहाँ से इतने रंग लाता, सुबह सबेरे ही खिल जाता।
तरह तरह के रूप धरकर फूल, सारी दुनिया को महकाता।
फूलों से हम जीना सीखें, काँटों पर भी चलना सीखें।
जीवन को वरदान समझकर, दुख में भी हम हँसना सीखें।

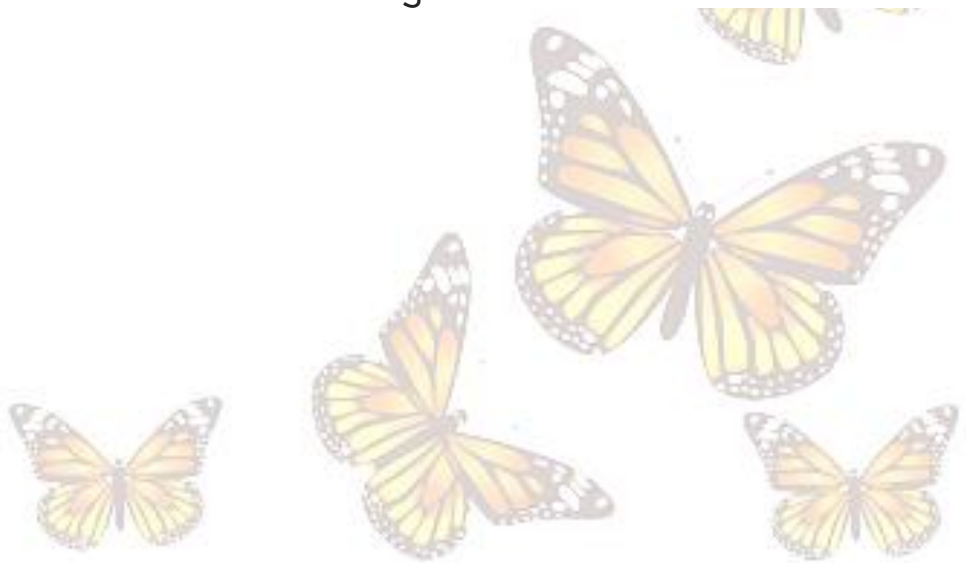

28.भोला बचपन

****

कभी ना भूलने वाला बचपन, बड़ा सुहाना भोला बचपन।
टिड्डे, तितली, चिड़ियों के पीछे, दिन भर दौड़ लगाता बचपन।
आम, जाम, इमली के बगीचे, क्या क्या नही चुराता बचपन।
गिल्ली-डंडे, लट्टू , कंचे, खेल खिलौनों में बीतता बचपन।
पेड़ों की डाली, माँ की साड़ी, इन झूलों में झूलता बचपन।
दादी सुनाती रोज कहानी, कई रिश्तों संग पलता बचपन।
छमछम बारिश कागज की नाव, दुनिया की सैर लगाता बचपन।
दरिया, नदियाँ, खेतों की पगडण्डी, हँसता और हँसाता बचपन।

29.**गौरैया**

****

आँगन में देखो तो माँ, रोज गौरैया आने लगी है।
चावल के दानों को देख, पास पास फुदकने लगी है।
दीवार के छेद में अब, तिनकों से घोंसला बनाने लगी है।
नहीं डरती है गौरैया हमसे, हमें अपना समझने लगी है।
देती हूँ दाना पानी उसको ,अब चहचहाहट गूँजने लगी है।

30.**प्रकृति**

****

झरझर झरझर झरते झरने, गिरि सुनाते अपना राग।
कलकल कलकल बहती नदियाँ, सुमनों से महकते बाग।
चंदा तारे हमें सुलाते, सूरज आकर कहता जाग।
चिड़ियाँ फुदकती पेड़ों पर, भौरें, तितली पीते पराग।
हरी भरी धरती हमारी, चारों तरफ छाई बहार।
जब गिरती बारिश की बूंदें, खुशबू लेकर आती बयार।
प्रकृति होती माँ समान, करती अपने बच्चों से प्यार।
हम भी इनकी रक्षा करें, सदा रहे सुंदर यह संसार।

31.**माथे का चंदन**

****

रज कण है माथे का चंदन, ये भूमि है रत्नों की खान।
जन जन करते माँ का वंदन , चेहरे पर रखकर मुस्कान।
मिलजुल कर बढ़ाना है, अपनी मातृभूमि का मान।
भारत माँ की रक्षा के खातिर , हम दे देंगे अपनी जान।
आँच न आने देंगे कभी, बढ़ाएँगे सदा इसकी शान ।
निज सुख का त्याग करें, देश है स्वर्ग से भी महान।
देश सेवा सबसे बड़ा धर्म, बढ़ती रहे इसकी आन बान।
विश्व में इसका परचम लहराए , गाए सभी गौरव गान।

32. **गुरु की महिमा**

****

गर गुरु न होते इस जीवन में , हमको राह दिखाता कौन।
काले काले अक्षर किताब के, पढ़ना हमें सिखाता कौन।
काँटों भरी कठिन डगर में , चलना हमें सिखाता कौन।
तपा परिश्रम की अग्नि में नित ,कुंदन हमें बनाता कौन।
डूब जाता जब मन निराशा में, आस दीप जलाता कौन।
देकर भीतर से मजबूत सहारा, आगे हमें बढ़ाता कौन।
है कठिन अनुशासन की राहें ,सदमार्ग पर ले जाता कौन।
परोपकार की सार्थकता से ,परिचित हमें कराता कौन।
सही गलत उचित अनुचित का भेद, प्यार से समझाता कौन।
गीली मिट्टी से नन्हे बच्चों को, सुंदर स्वरूप देता कौन।
गुरु ही ब्रम्हा, गुरु ही विष्णु, सृजन का महत्व बताता कौन।
गुरु शिल्पकार, गुरु चित्रकार, हममें नव रंग भरता कौन।
मात पिता की सेवा करना, रिश्तों का मोल बताता कौन।
गुरु के सीख बिना इस जग में , जीना हमें सिखाता कौन।
गुरु के जैसा निःस्वार्थ भाव से, सिर पर हाथ रखता कौन।
किन शब्दों में मैं करूँ बखान , गुरू से बढ़कर होता कौन।

33. **होली**

*****

खुशियाँ बिखरी चारों ओर, आया रंगों का त्यौहार।
रंग, गुलाल, पिचकारी से, सज धज गया बाजार।
द्वेष दंभ सब भूलकर, फैलाएँ हम जग में प्यार।
बैर केवल हानि पहुँचाता, सुख देता सद्व्यवहार।
पलास की शोभा निराली, महकती आयी बयार।
रंग जाए ये दुनिया सारी, कर दो रंगों की बौछार।
मिले सबको स्नेह अपार, इस बार की होली ऐसी हो।
नाचे सब दर्द भूलकर, इस बार की होली ऐसी हो।
अंतस की काई धुल जाए, इस बार की होली ऐसी हो।
दहन करें बुराई का, इस बार की होली ऐसी हो।

34. माँ

****

माँ ममता की मूरत होती ,माँ होती भगवान।
माँ का स्थान अद्‌वितीय , माँ गुणों की खान।
माँ शब्द में संसार बसा है , माँ से बढ़कर कौन।
अद्‌भुत धैर्य धरा सा उनमें , सहती रहती मौन।
कड़ी धूप में शीतल छाया , स्नेह भरी पुरवाई माँ।
माँ होती गुनगुनी धूप , हर रोग की दवाई माँ।
गंगाजल सी पावन माँ , द्‌वेष दंभ से रहती कोसों दूर।
माँ की गोद सुखद बिछौना , बच्चे होते माँ के गुरुर।
माँ नाम समर्पण का , वात्सल्य की निर्मल धारा।
खुश रहती सबकी खुशी में , होती सुदृढ़ सहारा।
बच्चों के जीवन में , अमृत रस से भर देती आनंद।
पाने माँ की ममता, धरती पर आते हैं परमानन्द।
छलक पड़े आँखो से आँसू , माँ की याद आते ही।
मुँह से निकलता माँ माँ , चोंट जरा सा लगते ही।

35. **बिटिया**

****

दरवाजे पर खड़ी होकर बिटिया, करती है पापा का इंतजार।
पापा भी अपनी गुड़िया को, लगे लगाकर करते हैं प्यार।
धमाचौकड़ी ख़ूब मचाते दोनों, मम्मी की फिर डाँट खाते।
बिटिया है उनकी राजकुमारी , उसकी इच्छा सब पूरी करते।
जब कभी बीमार पड़ती वो, सब बिटिया के पास ही रहते।
अपने खाने का पहला कौंर, पापा बिटिया को खिलाते।
पापा सिखाते पढ़ना लिखना, बिटिया के हैं मार्गदर्शक।
इस दुनिया में जीना सिखाया , खड़े रहते बनकर रक्षक।
जब भी कोई सफलता मिलती, सबसे ज्यादा वही खुश होते।
प्रोत्साहित करते रहते हमेशा, बिटिया का हौसला बढ़ाते।

36. **पिता**

******

तपती धूप में वो छाया है, सागर सा प्यार समाया है।
संकट में संबल बन जाते, हम बच्चों का डर भगाते।
कभी बन जाते घोड़ा गाड़ी, कभी बनते छुकछुक गाड़ी।
बिठा अपने कंधे पर हमको, दुनिया की वे सैर कराते।
सबसे अच्छे प्यारे पापा, हर मनचाही चीज दिलाते।
पिता होते बच्चों की शक्ति, करते हैं उनका सम्मान।
पिता का भी ख्याल रखें, हम सब बने ऐसी संतान।

37.**किसान**

****

दिन रात परिश्रम करके, फसल उपजाता है किसान।
अपने पसीने की बूँदों से, पौधों को सींचता किसान।
खेतों में हरियाली देखकर, हो जाता गदगद किसान।
मिट्टी को माता मानता, सादा जीवन जीता किसान।
कड़कती ठंड ,बरसता पानी, धूप गर्मी में तपता किसान,
बीमारियाँ कीट अनेक , मौसम की मार सहता किसान।
मेहनत और लगन का, फल आधा भी नही पाता किसान।
औरों के पेट भरता भूखा रह, अन्नदाता कहलाता किसान।

अनिता चन्द्राकर

व्याख्याता (गणित)
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पहंडोर
विकासखंड - पाटन, जिला - दुर्ग, छत्तीसगढ़